website: www.pawanprawah.com
डाक पंजीयन संख्या GPO LW/NP-106/2018-2020
सत्य का प्रवाह सतत् प्रवाह
लखनऊ से प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक

लेखक डॉ. भरत राज सिंह
स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज के महानिदेशक
एवं वैदिक विज्ञान केन्द्र के अध्यक्ष हैं

भारत मे भीषण तूफान व बाढ़

पिछले अंक 3 मे हमने पाया कि आपदाओं, तीव्र तूफान, भारी बर्फ गिरने के कारण जन-जीवन प्रभावित हो रहे हैं और जीवन के लिए ऐसी स्थितिया अनुकूल नहीं बन रही हैं तथा आजीविका के लिये भारी नुकसान हो सकता है। आइये पिछले अंक से आगे की जानकारी प्रप्त करे।

भाग-04

प्रो. भरत राज सिंह, महानिदेशक, स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज, लखनऊ, जो पुस्तक के संपादक हैं द्वाराः क्लाइमेट चेंज - रियलिटीज़, इम्पैक्ट्स ओवर आइस कैप, सी लेवल और रिस्क, ISBN:978-953-51-0934-1, जनवरी 2013 में इनटेक, रिजेका,, क्रोएशिया द्वारा प्रकाशित की गई है। उक्त पुस्तक में बहुत पहले से ही पृष्ठ 63 पर भविष्यवाणी की जा चुकी है, जिसे पुनः निम्नानुसार प्रस्तुत किया जा रहा है ।

अध्ययनों और रिपोर्टों से पता चलता है कि कार्बन डाइऑक्साइड और अन्य गैसों के छोड़े जाने के कारण ग्रीनहाउस गैस वैश्विक तापमान में वृद्धि के मुख्य संभावित कारण है और इसके कारण उत्तरी ध्रुव बर्फ के पिघलने से समुद्र के स्तर में वृद्धि तथा उससे सम्भावित आपदाओं को ट्रिगर कर रही है और प्रमुख मुद्दों पर ध्यान दिया जाना अत्यंत आवश्यक हो गया है:

मानवीय गतिविधियों से उत्सर्जित ग्रीन हाउस के कारण मौसम की घटनाओं की आवृत्ति में वृद्धि चरम पर पहुचेगी।

जलवायु परिवर्तन के कारण बहुत अधिक गर्मी की लहरें, सूखा और वर्षा के पैटर्न में परिवर्तन होने की संभावना है।

2050 तक, 2.5 फीट समुद्र की सतह में वृद्धि और 2080 तक 4.5द्धह्ल से भी अधिक पहुंच सकती है ।

ग्लोबल वार्मिंग के कारण पृथ्वी ग्रह को एक नए और अप्रत्याशित तरीके से भूकंप, सुनामी, हिमस्खलन और ज्वालामुखी विस्फोट की चेतावनी देता है ।

भविष्य में कभी भी आए तूफान से न्यूयॉर्क शहर की मैनहट्टन को जोडने वाली सड़के एक तिहाई पानी से जलमग्न कर देंगे और जलवायु परिवर्तन के कारण में एक घंटे से कम समय में कई क्षेत्रो में बाढ़ आ जाएगी।

यदि हम अपने हाइड्रोकार्बन आधारित ऊर्जा प्रणालियों को बदल देते हैं और यदि हम अभूतपूर्व रूप से जंगलों में आ रही आपदाओं और अभूतपूर्व पैमाने पर हो रहे पलायन के लिए पर्याप्त रूप से वित्तपोषित आवश्यक कार्यक्रम शुरू करते हैं, तो जलवायु परिवर्तन से बचा जा सकता है।

प्रो0 सिंह की एक अन्य पुस्तक ग्लोबल वार्मिंग - कारण, प्रभाव और उपचार, ISBN 978-953-51-0934-1, इनटेक, रिजेका, क्रोएशिया द्वारा अप्रैल 2015 में पृष्ठ 39-40, प्रकाशित, अध्याय शीर्षकः आर्कटिक सी, एंड सी लेवल राइज के प्रभावों का अध्ययन पर विशेष रूप से एशियाई क्षेत्र जिसमें भारत के बारे में भविष्यवाणी की गई थी कि चूंकि यह तीन तरफ से समुद्र से घिरा हुआ है और चौथी तरफ हिमालय की पहाड़ियों से आक्षादित हुआ है, इससे ज-जीवन को भारी नुकसान पहुंच सकता है और निम्न के रूप में इसे पुनः उद्धरित किया जा सकता है:

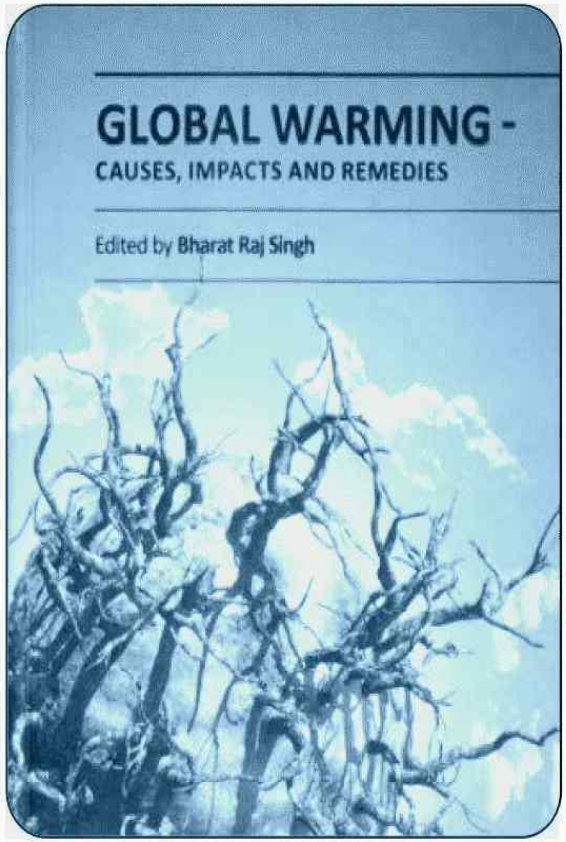

पिछले एक दशक से समुद्री बर्फ परिवर्तन की दर में पहले से ही बहुत बढ़ोत्तरी के संकेत दिखाई दे रहे हैं और 2020 या 2030 तक ऐसा होना अवास्तविक नहीं है, जबकि उत्तरी अमेरिका के नक्शे से अधिकांश महासागर बेसिन गर्मियों में बर्फ से मुक्त रहेंगे। ग्रीनलैंड, संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा के उत्तरी तटों पर 2040 तक समुद्री बर्फ की थोड़ी मात्रा ही रहेगी। अटलांटिक महासागर में बर्फ की भारी चादर के पहुचने से उत्तरी तट के पास ग्लेशियर बनने की संभावना है जो जल्दी से पानी में परिवर्तित नहीं हो सकते हैं और बढा सकते हैं-प्रेशर ड्रॉप, स्नो फॉल, माइनस (-) 60-70 डिग्री सेंटीग्रेड जिसपर अत्यधिक तापमान गिरता है। संयुक्त राज्य अमेरिका और ब्रिटेन का उत्तरी क्षेत्रः शीत लहरों, आपदाओं, तीव्र तूफानों, भारी हिमपात से प्रभावित हो सकता है जो जन-जीवन के लिए अनुकूल नहीं हो सकता है। इस जलवायु आपदा प्रभाव से उत्तर अमेरिकी और यूरोपीय लोगों की आबादी को उनके रहने के लिए नए स्थान खोजने के लिए मजबूर कर सकता है।

एशियाई क्षेत्र - विशेष रूप से भारत जो कि तीन तरफ से समुद्र के कछार से घिरा हुआ है, तीव्र- तीव्र तूफान से और चौथी तरफ से हिमालय की पहाड़ियों से, वह ठंड की लहरों से बुरी तरह प्रभावित हो सकता है। चूंकि हिमालयी ग्लेशियर क्षेत्र में भारी बर्फ गिरती है; जो जन-जीवन को भारी नुकसान पहुंचा सकता है। यह भी उम्मीद है कि स्थिति हर साल खराब होती रहेगी और यह स्थिति अगले दशक तक जारी रहेगी। सर्दियों के दौरान, न्यूयॉर्क, ब्रिटेन और कनाडा यानी उत्तरी बेल्ट, चरम मौसम की स्थिति से पीड़ित हो सकते हैं जैसेः तीव्र तूफान, भारी बर्फ का गिरना और बिजली बाधित होना। इस प्रकार खुशहाल जीवन के लिए पृथ्वी बचाओ और जीवन बचाओ के कार्यक्रम अपनाकर ग्लोबल वार्मिंग के कारण हो रहे जलवायु परिवर्तन को रोकने में मदद करने के लिए समय पर बहुत तेजी से कार्य करने की आवश्यकता है।

(शेष अगले अंक मे पढ़ें)

भारत के तटीय क्षेत्र में 150 मिमी तक भारी वर्षा की संभावना क्यों है?

भारत तीन तरफ से तटीय और चौथी तरफ हिमालय की पहाड़ियों से घिरा हुआ है। 128 बिलियन की कुल आबादी के मुकाबले लगभग 560 मिलियन भारतीय आबादी 43.7 प्रतिशत तटीय राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में रहती है और 171 मिलियन (14.2 प्रतिशत) आबादी भारत के तटीय क्षेत्र और तटीय जिलों में रहती है। ये अक्सर निचली सतह और घनी आबादी वाले क्षेत्र होते हैं, जिसका अर्थ बाढ़वाली आवादी, जिन पर विनाशकारी प्रभाव हो सकते हैं।

तालिका 1: जनसंख्या

क्र.सं.		
भारत की कुल जनसंख्या	1.28 बिलियन (जनगणना 2014, स्रोतः www.indiaonlinepages.com)	
1	तटीय राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की जनसंख्या	128 बिलियन की कुल जनसंख्या के मुकाबले 560 मिलियन है ।
2	द्वीप प्रदेशों की जनसंख्या	0.44 मिलियन
3	तटीय जिलों की कुल जनसंख्या	171 मिलियन
4	भारत के तटीय क्षेत्र और तटीय जिलों में जनसंख्या का प्रतिशत	14.2 प्रतिशत

उपर्युक्त भविष्यवाणियों के अनुसार, हम इस वर्ष तटीय क्षेत्र में बाढ़ और हिमालय क्षेत्रों में भूस्खलन के प्रभाव का कई गुना सामना कर रहे हैं।